फ़िल्मी संगीतकारों की पहचान का संकट: एक विश्लेषण

डॉ. अनुभव पाण्डेय
संगीत शिक्षक केन्द्रीय विद्यालय
हट्टी गोल्ड माइंस रायचूर, कर्नाटक
Email: anubhawpandey09@gmail.com

सारांश

फ़िल्म का एक गीत संगीतकार की कड़ी मेहनत और सोच का परिणाम होता है. गीतकार के बोल गायक की आवाज़ तथा वाद्यों का सन्तुलन कैसे बिठाना है यह सब संगीतकार के ज़िम्मे ही होता है. परन्तु प्रायः गीत तैयार होने पर संगीतकार कहीं हाशिये पर चला जाता है, उसे बताना पड़ता है कि ये गीत मैंने बनाया है. एक आम श्रोता तो ये भी नही समझता कि संगीत रचना जैसा भी कुछ होता है. वह तो अपने ज्ञान स्तर अनुसार फ़िल्म के नायक-नायिका या फिर गायक-गायिका को ही सब कुछ मान बैठता है. परिवेश के साथ आज बहुत परिवर्तन आया है. ऐसे में कार्यशैली तथा विचारों में परिवर्तन आना स्वाभाविक है. संगीतकार के योगदान तथा उपर्युक्त प्रश्न को एक जिज्ञासा के रूप में अनेक विद्वानों के मत जानने का प्रयास इस लेख में किया गया है. अनेक विद्वान सहमत हैं तो कुछ इस प्रश्न को आज के परिपेक्ष्य में निराधार मानते हैं. कुछ विद्वानों ने अपने मूल्यवान सुझाव भी दिए हैं. जिन पर विचार संभव है. प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः विभिन्न संगीत विद्वानों से लिए है साक्षात्कारों के आधार पर जुटाए गए तथ्यों पर आधारित है.

महत्वपूर्ण शब्द – संगीतकार, श्रेय, योगदान, गीतकार, गायक, गायिका, नायक, नायिका, फ़िल्में

हम सब ये जानते हैं कि फिल्में समाज का आईना होती हैं. जैसे-जैसे समाज के मूल्यों में परिवर्तन आता है वैसे ही फिल्में और उनका संगीत भी नित नवीन रूप धारण करता रहता है. संगीतकार एक सोच लेकर धुन की रचना करता है, गीतकार के शब्दों का भाव भली भाँति निखर कर आये इस बात का पूरा ध्यान रखना संगीतकार का ही दायित्व होता है. वाद्य संयोजन भी इस तरह से करना होता है जो गीत की भावना में प्राण फूँक दे. इसी क्रम में उपयुक्त गायक गायिका की खोज करना भी संगीतकार का काम होता है जिसकी आवाज़ गीत में चार चाँद लगा दे. अब यक्ष प्रश्न यह है कि समाज में कितने लोग ऐसे होते हैं जो संगीतकार के इन सब योगदानों को समझते हैं या उनका ध्यान इन सब पक्षों पर भी जाता है. उदाहरण स्वरुप एक घटना को लिया जा सकता है जो इस प्रकार है कि एक ट्रेन की जनरल बोगी में एक परिवार यात्रा कर रहा है और बड़ा ही प्रसिद्ध गीत 'इक राधा इक मीरा' मोबाइल पर बज रहा है. सब गीत सुन कर मुग्ध हो रहे हैं. तभी एक बोला, "राम तेरी गंगा मैली फ़िल्म में मंदाकिनी (अभिनेत्री) ने कितना अच्छा यह गीत गाया है" इस पर दूसरा बोला, "अरे नहीं मंदाकिनी ने तो अभिनय किया है, गीत तो लता मंगेशकर ने गाया है, इनकी मधुर आवाज़ में हर शब्द कितना अच्छा सुनाई देता है". तब तीसरा बोला, "लता जी ने तो इस गीत में सिर्फ अपनी आवाज़ दी है. इस गीत के पीछे की सोच इसके संगीतकार की है

जिसने इसकी स्वर रचना ही इस प्रकार की है जिससे हर शब्द दिल मे उतरता सा प्रतीत होता है". इस बात पर पिछले दोनों वक्ता बड़े ही आश्चर्य चकित हुए कि ये स्वर रचना क्या बला है? हम तो यही समझते आये कि मंदाकिनी या लता जी ने सब कुछ आपने आप ही ये गीत रचा होगा.

उपर्युक्त घटना में देखने को मिला कि पहले व्यक्ति को फ़िल्म देखने में रूचि थी तो उसने उसी ज्ञान के अनुसार जवाब दिया. दूसरा व्यक्ति गाने का शौकीन लगता है तभी उसने अपनी जानकारी के अनुसार बताया कि ये गीत तो अमुक गायिका ने गाया है परन्तु तीसरा व्यक्ति ऐसी बात बोल गया जो अन्य दोनों व्यक्तियों के गले उतरने में मुश्किल हो रही थी और एक प्रश्न खड़ा हो गया कि आखिर स्वर रचना क्या होती है.

अनेक विद्वानों से चर्चा करके इसी प्रश्न का जवाब खोजने का प्रयास इस लेख में किया जा रहा है. इसको लेकर विभिन्न विद्वान अलग अलग मत रखते हैं. कुछ इस बात से सहमत नहीं होते क्योंकि ए.आर रहमान और शंकर महादेवन जैसे संगीतकार आज खूब पहचाने जाते हैं. कुछ विद्वान इसे अशिक्षा का परिणाम मानते हैं तो कुछ ये मान कर संतोष कर लेते हैं कि जो दिखता है वो ही बिकता है. यहाँ इस प्रश्न को एक ऐसे श्रोता की दृष्टि से देखा जा रहा है जो संगीत को बिल्कुल नहीं समझता. इस विषय मे भजन सम्राट अनूप जलोटा जी कहते हैं कि, कल्याण जी भाई की पत्नी उनको हमेशा कहा करतीं थीं कि तुम करते क्या हो? इन्दीवर जी लिख देते हैं, किशोर कुमार जी गाना गा देते हैं. आर्केस्ट्रा वाद्य बजा देता है, रिकॉर्डिस्ट ने रिकार्ड कर दिया लेकिन आप क्या करते हो?...और वो अन्त तक ये बात नहीं समझ पायीं कि कल्याण जी आ़खिर करते क्या हैं".[1]

अनूप जलोटा जी आगे कहते हैं एक तो श्रोता की वो स्थिति है, और एक स्थिति यह है कि इन्सान को गाने बजाने की समझ नहीं है फ़िर भी वो संगीत का आनन्द लेता है. एक अन्य स्थिति है जब कोई संगीत कोई थोड़ा-बहुत सीख कर गाने-बजाने लायक हो जाता है. एक स्थिति है जब कोई बहुत ही ज़्यादा सीखा हुआ होता है और संगीत की बहुत ही बारीक़ समझ रखता है. ये जो बीच वाली स्थिति होती है वो श्रोता के लिए सबसे अच्छी होती है, क्योंकि इसमें व्यक्ति आलोचक नहीं हो सकता बल्कि विद्यार्थी की तरह सदैव जिज्ञासु रहता है. जो भी सुनेगा उसका पूर्ण आनन्द ले सकेगा. जो बहुत ज़्यादा जानकार होगा. उसे हमेशा कुछ न कुछ कमी दिख ही जाएगी कि राग मालकोंस में ये सुर ठीक नहीं लग रहा. अनूप जी कहते हैं कि उनके जैसा व्यक्ति सुनेगा तो बोलेगा बड़ा ही सुंदर है, परन्तु जिसने कई राग सीखें हैं और गहरा विश्लेषण करता है, वो इसका आनन्द नहीं ले सकता. जो आनन्द लेगा वो श्रोता है, जिसे बहुत ज़्यादा ज्ञान है वो आलोचक है. अनूप जलोटा जी का मानना है की सुनने से पहले एक विद्यार्थी बन जाइये. अन्यथा लोग तो मेहन्दी हसन, ग़ुलाम अली तथा लता जी के लिए भी कह देते हैं कि ये लोग गाना ठीक नहीं गाते. ऐसे लोग शायद कुछ ज़्यादा बड़े क्रिटिक हैं जो कभी आनन्द नहीं ले पायेंगे. कोई भी संगीतकार कभी ये सोच कर गीत नहीं बनाता कि मुझे फलाँ राग में बनाना है वो तो एक प्रवाह है जिसमे कोई रचना स्वतः ही बना कर तैयार हो जाती है और बाद में विश्लेषण करने वाले कहते हैं कि अरे ये तो इस राग में है. संगीतकार रवीन्द्र जैन ने इस पर एक गीत भी लिखा था कि, 'जब तक गीत अपूर्ण, तभी तक गाने का आनन्द प्रिये'. गाना जब तक बन रहा है तब तक आधा है तभी तक उसका आनन्द है जब वो बन कर तैयार हो गया तब

तो कुछ बनने को रहा ही नहीं. ये जो निर्माण की प्रक्रिया है इसका पूरा आनन्द लेना चाहिए. आप अगर ट्रेन में दिल्ली जा रहे हैं तो यात्रा का आनन्द लीजिये. दिल्ली पहुच कर तो वो पूर्ण ही हो जाएगी. आज जिस गीत की रिकार्डिंग हो रही है. जब तक ये चल रही है तभी तक इसका आनन्द है, बाद में तो ये तैयार हो ही जाएगी और कहीं भी सुनी जा सकेगी. यह एक यात्रा की तरह है जिसका पूरा आनन्द उठाना चाहिए. यहाँ अनूप जलोटा जी ने एक अलग विचार सामने रखा कि ज़्यादा जानकर होना कई बार आपको आनन्द की अनुभूति नहीं होने देता. और एक आम श्रोता जो संगीत का क, ख, ग, नही समझता अधिक आनन्द उठा पाता है.

संगीतकारों की पहचान के मुद्दे पर विषय में प्रसिद्ध गायिका अनुराधा पौडवाल जी कहती हैं कि, "गुलशन कुमार जी के पहले तक ऐसा था. उन्होंने पहली बार संगीतकारों की तस्वीरें कवर पर छापना शुरू किया. तब से लोगों को पता चला कि कम्पोज़र नाम के भी कोई होता हैं. गुलशन जी कलाकारों को प्रकाश में लाये तो इसका श्रेय उनको जाता है".[2] हम सभी जानते हैं कि एक दौर कवर गीतों का भी आया था जिसमें संगीतकार, गीतकार तथा गायक, गायिकाओं की तस्वीरें ऑडियो कैसेट्स के कवर पर छापी जाती थीं जिससे आमजन भी इनको वैसे ही पहचानने लगे थे जैसे पोस्टर देख कर किसी फिल्म के नायक नायिका को.

गुज़रे ज़माने के प्रसिद्ध गायक जसपाल सिंह जी इस बात से असहमति जताते है. वो अपना विचार कुछ इस प्रकार रखते है कि संगीतकार या गायक का पहचाना जाना फ़िल्म की सफ़लता पर निर्भर करता है वो कहते हैं, "ऐसा नहीं है, अगर कोई फ़िल्म हिट हो गई तो गायक तो सामने रहता ही है, और संगीतकार को भी श्रेय मिलता है. हाँ अगर पिक्चर फ़ेल हो गई, तो सब कुछ मिट जाता है. सभी कलाकारों के साथ ऐसा होता है कि कभी संगीतकार का संगीत नहीं चलता, कभी गायक का गायन नहीं चलता, कभी लिखने वालों का लेखन वह जादू नहीं जगा पाता जो जगना चाहिये".[3]

अरेंजर तथा प्रोग्रामर श्री कश्यप वोरा कहते हैं, "यह तो शुरू से रहा है ना, जो दिखता है, वह बिकता है. पहले रेडियो पर बोला जाता था कि फ़लाँ गाना लता मंगेशकर और किशोर कुमार ने गाया है. लिरिक्स राइटर कौन है, साहिर लुधियानवी जी ने लिखा हुआ है, और इसके संगीतकार यह हैं. तीन नाम इसी क्रम में बोले जाते थे और सबसे अन्त में संगीतकार का नाम आता था क्योंकि जो नाम पहले आया निकल गया, दूसरा थोड़ा सा याद रहेगा लेकिन तीसरा बराबर से याद रहेगा. कुछ लोग उस पहले नाम को ही सुनकर संतोष कर लेते हैं. उसके आगे वह सुनते ही नहीं हैं".[4] कश्यप जी आगे कहते हैं कि प्रधानता कब किसको दी गई है, यह समझना मुश्किल है. फ़िल्मों में भी डायरेक्टर प्रोड्यूसर का नाम सबसे अन्त में आता है. उसमें तो लोग सबसे पहले फ़िल्म में नायक नायिका को ही देखते हैं. फ़िल्म में वो नायक नायिका को ही देखने जाते हैं या फिर गाना सुनने के लिए जायेंगे, तो यह देखेंगे कौन गा रहा है. पहले गाना सुना जाता था, अब तो टीवी पर घर-घर में गाना देखा जा रहा है और सिर्फ़ देखा ही जा रहा है, प्रमोशन किसी का नहीं हो रहा है. आजकल गायक भी अपने वीडियोज़ बना रहे हैं, तो वही बिक रहे हैं. लिरिक्स राइटर को कोई अहमियत नहीं दी जाती है. अरेन्जर क्या होता है वह तो आज के ज़माने में किसी को पता ही नहीं. जो प्रोग्रामिंग करता है वही गाना गा रहा है. वही म्यूज़िक डायरेक्टर है, वही सब कुछ है, इतने से

कैमरे में सारा कुछ आ जाता है. आज के समय में बाहर से कोई आता नहीं है. समय के साथ कुछ चीज़ें आहिस्ते-आहिस्ते धुंधली हो जाती हैं.

प्रसिद्ध पार्श्व गायिका कविता कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम कहती हैं, "मुझे लगता है कि हमारे देश में शिक्षा की कमी की वजह से अनेक महान संगीतकारों को जो श्रेय मिलना चाहिये, वह उनको उतना मिला नहीं जिस तरह के वह विद्वान थे, मेरे हिसाब से इस इंडस्ट्री में ईमानदारी और इंटीग्रिटी से काम करना बहुत मुश्किल है और उन्होंने इस को क़ायम रखा".[5] श्रोताओं को आम से खास बनाने के लिए कविता जी यह सुझाव देती हैं कि अगर टीवी, रेडियो पर अच्छी-अच्छी चीज़ें आती हैं, तो लोगों का संगीत समझने का स्तर अपने आप ऊँचा हो जायेगा. जिस ज़माने में म्यूज़िक डायरेक्टर जयदेव देव जी थे, रोशन जी थे. यह लोग संगीत के माध्यम से उस समय ईश्वर को ढूँढते थे. उन्होंने संगीत को कभी मनोरंजन के रूप में लिया ही नहीं. उनके लिए संगीत एक भक्ति है, एक साँस है. उसी से वह ईश्वर को पहचानते थे. मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि हमारे ज़माने में ऐसे लोगों के साथ हमारा उठना-बैठना हुआ. यही मेरी चालीस साल की पूँजी है".[6]

प्रसिद्ध पार्श्व गायक स्वर्गीय श्री मुहम्मद अजीज़ जी इस प्रश्न का जवाब कुछ इस प्रकार देते हैं, "यह तो निर्भर करता है कि आप में कितनी गहराई है. आज की पीढ़ी में जिसमें गहराई है, जो अच्छा संगीत और अच्छी शायरी सुनने का शौक़ रखते हैं. वह अगर उनको सुनेगा अच्छी तरह तो समझ में आएगा कि शायरी क्या होती है संगीत क्या होता है".[7] मुहम्मद अजीज़ जी का मानना हैं कि जैसा सुनना होगा वैसा ही गाना बजाना भी होगा. अच्छे संगीतकार को समझने के लिए संगीत की अच्छी समझ होनी चाहिये.

प्रसिद्ध पार्श्व गायिका पामेला जैन के अनुसार, "मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ, जैसे फ़िल्म होती है तो अभिनेता ही सामने रहता है. उसके पीछे कितनी बड़ी टीम है, वह लोग जानते ही नहीं. लेकिन एक चीज़ बताऊँ, गाने वाला कुछ भी नहीं है, अगर हम लोगों को गाने नहीं मिलेंगे तो हम कुछ भी नहीं हैं, मात्र एक शून्य. आज जिसने भी नाम कमाया है जैसे श्रेया घोषल हैं, अगर उसे गाने नहीं मिलते तो गाती क्या, तो लोग जानते कैसे उनको. इसीलिए हमेशा नतमस्तक रहना चाहिए कि जो गीत हमें मिले बहुत सुंदर थे. तभी हमारा वजूद है और देखा जाए तो उस काम में कितनी मेहनत है. गाने वाला तो फ़ेस ऑफ द सॉन्ग है, लेकिन उसके पीछे संगीतकार ने कितनी मेहनत की, शब्द रचना का कितना बड़ा योगदान है. आज के म्यूज़िक डायरेक्टर तो अपना पूरा लाइमलाइट ले लेते हैं, पर पुराने म्यूज़िक डायरेक्टर्स को यह नहीं मिला है. हमको जो म्यूज़िक डायरेक्टर मिलते हैं, गुरु के जैसे मिलते हैं क्योंकि जो हमको सीखना है वहीं से आता है और वो नहीं आएगा तो गाना क्या आयेगा".[8]

संगीतकार रवीन्द्र जैन की योग्य शिष्या श्रीमती पूनम राज भारद्वाज अपने विचार रखते हुए कहती हैं, "इस बारे में तो मैं तो यही कहूँगी कि मुझे बहुत दुःख होता है क्योंकि जो सिंगर है वह तो बहुत बाद में आता है. पहले गीतकार जो कि आत्मा है गीत की क्योंकि जो गीत के भाव हैं वह सबसे पहले याद आते हैं फिर उसके बाद जो उसमें संगीत है वह याद आता है. गीतकार को तो लोग आजकल पहचानते नहीं हैं. सच है संगीतकार को भी

अक़्सर लोग नहीं जानते. सिंगर को तो एक बार पहचान भी लेते हैं क्योंकि उसकी आवाज़ सामने आती है. मेरी एक ख़ास तौर से रिक्वेस्ट रहेगी जो संगीत सीख रहे हैं उनसे मैं यही विनती करुँगी कि वह संगीतकार के विषय में भी जिज्ञासा रखें. जब वह किसी गीत को तैयार करते हैं तो उस गीत के गीतकार, संगीतकार का भी नाम साथ में याद रखा करें. कई लोग यूट्यूब पर अपने गाने अपलोड करते हैं तो उसमें सिंगर का भी नाम नहीं लिखा होता बल्कि उसमें हीरो का नाम लिखा होता है ऐसे में पता ही नहीं चल पाता कि किसने गाया है, वह गीत या फ़िर किस का संगीत है या फ़िर किसने लिखा है. बुरी स्थिति तो यह है आज के टाइम में अरेन्जर को तो कोई जानता ही नहीं है जो इतना सारे इंस्ट्रूमेंट का तामझाम संभालता है. म्यूज़िक डायरेक्टर का जितना योगदान होता है उतना ही अरेन्जर का भी होता है, इनको तो कहीं गिना ही नहीं जाता".[9] पूनम जी अपनी आगे की योजना के विषय मे बताते हुए कहती हैं कि वो जल्दी ही एक प्रोग्राम करने वाली हैं जिसमें प्रसिद्ध अरेन्जर्स का इंटरव्यू लिया जाएगा और उनको प्रकाशित तथा सम्मानित भी किया जायेगा.

शायर राशिद दामोहि जी बताते हैं कि, "मेरे ख़्याल से हर संगीतकार के साथ यह विडंबना है. यह वैसी बात है कि एक फ़िल्म में तीन विधायें होती हैं, एक एक्टिंग हो गई, एक गीत हो गया और एक संगीत हो गया. कलाकार के पीछे यह तीन चीज़ें होती हैं. निर्भर करता है कि इस फ़िल्म के इन तीनों भागों को कौन किस नज़र से देख रहा है, जैसे मैं शायर हूँ, तो पूरी फ़िल्म में मेरी नज़र होगी गीतों पर. अगर कोई संगीत से जुड़ा आदमी है तो वह उसके गीतों को गुनगुनाता हुआ निकलेगा. कोई अगर एक्टिंग से जुड़ा हुआ आदमी है तो वह वही चीज़ लेकर बाहर निकलेगा. किसी फ़िल्म से ये तीनों चीज़ें बाहर निकलें तो यह फ़िल्म की सम्पूर्ण सफ़लता है जैसे फ़िल्म 'शोले', उसके गाने भी बाहर आए, उसकी एक्टिंग भी बाहर आई और उसके गीत भी बाहर आये. मतलब सम्पूर्ण सफ़लता, मुग़ले आज़म, मदर इंडिया सम्पूर्ण सफ़लता. आप यह नहीं कह सकते कि सिर्फ़ उसका म्यूज़िक हिट हुआ. उसका सारा कन्टेन्ट हिट हुआ. जैसे 'राम तेरी गंगा मैली' में जो संगीत वाले हैं, वह कहेंगे कि क्या धुन दी है रवीन्द्र जैन साहब ने, जो गीत के रसिया हैं वह कहेंगे क्या शब्द थे, और जो एक्टिंग वाले हैं वह कहेंगे कि राज कपूर ने कितना अच्छा काम किया है, थोड़ा और अच्छा काम करना था".[10]

प्रसिद्ध राजस्थानी लोक गायिका रेखा राव कहती हैं कि, "नहीं, ऐसा नहीं है. आज के दौर के लिए तो यह बात आप बोल सकते हो कि संगीतकार का नाम लोग नहीं जानते लेकिन एक दौर था जहाँ लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल के गाने सब को याद थे, शंकर-जयकिशन जी के गाने लोगों को याद थे. इसी तरह 'हिना' के गाने, 'राम तेरी गंगा मैली' के गाने, रवीन्द्र जैन जी के नाम से जाने जाते हैं. यहाँ तक की रामायण और रवीन्द्र जैन एक दूसरे के पूरक हैं, जिन्हें लोग दादू के नाम से जानते हैं, रामायण की चौपाइयों के लिए हमेशा रवीन्द्र जैन जी का नाम लिया जाता है. लोग उन चौपाइयों को ट्रेडिशनल मानते हैं".[11]

ग़ज़ल गायिका रितु जौहरी मानती हैं कि आज के दौर में स्थितियाँ बदल चुकी हैं वो कहती हैं "यह बात नब्बे के दशक में होती थी. उस समय क्या होता था कि सिर्फ़ हीरो और हीरोइन को लोग सिर्फ पर्दे पर देखते थे पर आज यह दौर खत्म हो गया क्योंकि आज सबको स्क्रीन मिल गई है, सिंगर को भी स्क्रीन मिल गई, म्यूज़िक

डायरेक्टर को भी स्क्रीन मिल गई. आप देखेंगे जब फ़िल्म के लास्ट में जब कास्टिंग आती है तो लोग शूट डालते हैं, मेकिंग ऑफ डालते हैं और इसमें सबसे ज्यादा हेल्प की है इंटरनेट ने, कौन सी फ़िल्म का गाना कब बना कैसे बना. यह सब है तो आज तो यह कहना पॉसिबल ही नहीं है कि लोग नहीं जानते हैं वह नब्बे के दशक का टाइम था, जब इंटरनेट नहीं था जब फ़ोन इतने पॉपुलर नहीं थे. आज तो आपको किसी की भी मेकिंग देखनी है तो सबकी मेकिंग मिल जाएगी अब तो बल्कि सब लोग चेहरे से जानते हैं और फिर यह रियलिटी शो आने शुरू हो गए जहाँ म्यूज़िक डायरेक्टर बैठ के जज करते हैं कि अब आनन्द-मिलिंद आ रहे हैं, अब शंकर महादेवन आ रहे हैं. वहाँ पर भी सब देख रहे हैं तो सब लोग तो जानते ही हैं".[12]

प्रसिद्ध पार्श्व गायक सुरेश वाडेकर जी कहते हैं, "देखिये जिसकी आवाज़ सुनी जाती है पहले वही दिखता है बाद में इसके बारे में सोचा जाता है कि किसने इसे बनाया है, किसने लिखा है इसे. जो साधारण लोग होंगे वो तो गायक का ही नाम लेंगे. उसे मालूम भी नहीं होता कि संगीतकार कौन है, या लेखक कौन है. ये बहुत दुःख की बात है लेकिन ये दो तबके हमेशा रहेंगे क्योंकि जिनको इसका आनन्द लेना है, साधारण जो सुनने वाले लोग हैं वो गायक को ही सुनेंगे. इसका कोई इलाज है नहीं या फ़िर इसके उत्साह वर्धन के लिए कक्षायें चलाई जायें. जहाँ लोगों को कम से कम संगीत सुनना जानना सिखाया जाय कि संगीतकार, लेखक आदि पर भी ध्यान दिया करें. संगीत को समझने के लिए उसके अंदर जा कर सोचना आम श्रोता के लिए तो आज भी सम्भव नहीं".[13]

बीते जमाने के पार्श्व गायक तथा संगीतकार सुशील कुमार शील जी अपने विचार कुछ इस प्रकार रखते हैं, "ये तो मैंने खुद भी महसूस किया है. जब बचपन मे हम रेडियो पर गाने सुनते थे तो हमेशा गायक का नाम ही बताया जाता था. तब तक हमारी समझ यही कहती थी कि इन्होंने ही गाया है, इन्होंने ही बनाया है सब कुछ इन्हीं का किया हुआ है फ़िर धीरे-धीरे समझ आती गयी कि म्यूज़िक डायरेक्टर के क्या काम होता है. बहुत समय तक तो हमको पता ही नहीं चला कि ये कई-कई वॉयलिन बजते हैं वो कौन सा साज़ है. सोलो वॉयलिन की आवाज़ तो पता थी कि कैसी होती है. क्योंकि जब दस-बीस वॉयलिन बजते है तो उनकी टोन ही अलग हो जाती है".[14]

निष्कर्ष:

यहाँ हमने देखा कि एक प्रश्न से ही कितने प्रकार के विचार सामने आए. अनेक विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोण से इस विचार को देखा और अपने बहुमूल्य सुझाव दिये जिसमें यह निकल कर आया कि संगीतकार पूरे गीत को सजा सँवार कर प्रस्तुत करता है परन्तु उसके काम को समझने के लिए भी एक विशेष समझ होनी चाहिये. संगीतकार की स्वयं की एक विशिष्ट शैली होनी चाहिये. जिससे सहज ही पहचान में आ जाता है कि ये तो अमुक संगीतकार का काम है. अगर समस्या को जड़ से समझा जाय तो ये साफ़ नज़र आता है कि समाज में बहुत कम लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी संगीत शिक्षा प्राप्त की है. यहाँ जिस समझ की बात की जा रही है, वह होना तभी संभव है, जब संगीत शिक्षा भी उतनी ही सामान्य हो जितनी गणित, विज्ञान या कोई दूसरा विषय. शिक्षा के अभाव में कुछ ऐसी स्थिति बन जाती है कि हम पुस्तक पढ़ने बैठे हैं पर अक्षरों का ज्ञान ही नहीं. ऐसे में आम श्रोता से बहुत

समझदारी की उम्मीद करना निरर्थक है, फ़िर फ़िल्मी संगीतकार क्या कोई भी संगीतकार पक्के कानों वाले श्रोता की उम्मीद भी कैसे कर सकता है ? अतः समाज में संगीत शिक्षा का भी महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिये ताकि कला को समझने वाले ख़त्म न हों. हीरे की परख करने वाले जौहरी सहज ही प्राप्य हों और एक संगीतकार जो पर्दे के पीछे से संगीत सज्जा करता है. वो पर्दे के पीछे ही न रह जाये. उसे भी वैसा ही नाम मिले जैसा मंच पर अभिनय करने वाले कलाकारों को मिलता है.

साक्षात्कार:

1. प्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा से दिनांक 10/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
2. प्रसिद्ध पार्श्व गायिका अनुराधा पौडवाल से दिनांक 11/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
3. प्रसिद्ध पार्श्व गायक जसपाल सिंह से दिनांक 03/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
4. गिटार वादक, अरेन्जर, प्रोग्रामर, रिदमिस्ट, असिस्टेंट कश्यप वोरा से दिनांक 04/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
5. प्रसिद्ध पार्श्व गायिका कविता कृष्णमूर्ति से दिनांक 13/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
6. वही
7. प्रसिद्ध पार्श्व गायक स्वर्गीय मुहम्मद अजीज़ से दिनांक 11/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
8. प्रसिद्ध पार्श्व गायिका पामेला जैन से दिनांक 05/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
9. संगीतकार रवीन्द्र जैन की सुयोग्य शिष्या सुश्री पूनम राज भारतद्वाज से दिनांक 31/05/2018 को लिए गये साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
10. शायर तथा पटकथा लेखक राशिद दामोही से दिनांक 05/06/2018 को लिए गये साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
11. राजस्थानी लोकगायिका सुश्री रेखा राव से दिनांक 31/05/2018 को लिए गये साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
12. प्रसिद्ध ग़ज़ल गायिका रितु जौहरी से दिनांक 06/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
13. प्रसिद्ध पार्श्व गायक सुरेश वाडेकर से दिनांक 09/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.
14. बीते ज़माने के पार्श्व गायक तथा संगीतकार सुशील कुमार शील से दिनांक 09/06/2018 को लिए गये प्रत्यक्ष साक्षात्कार से साभार उद्धृत.